













(ii) ହରି ଇତିହାସ ବହି ପଢ଼ିବ ।

---

---

(iii) ତୁମେ କାଲି କୁଆଡ଼େ ଯାଇଥିଲ ?

---

---

(iv) ଛାତ୍ର ବିଦ୍ୟାଳୟକୁ ଯିବା ଉଚିତ ।

---

---

(v) ସେ କାହାଠାରୁ ଧାର ନ କରୁ ।

---

---

(vi) ସାପ ନେଉଳକୁ ଡରେ ।

---

---

(vii) ବାପା ସ୍ୱଭାବରେ ସରଳ ଥିଲେ ।

---

---

(viii) ପଢ଼ିବା ପରେ ଭୋଜନ କର ।

---

---

## UNIT - V

5. अधोलिखितम् अनुच्छेदं पठित्वा पञ्चानां (5) प्रश्नानाम् उत्तरं संक्षेपेण लिखत -

[5x2=10]

पुरा बोधिसत्त्वः ब्राह्मणकुले जातः, सः अत्यन्तमेधावी, अल्पेन कालेन सकलाः विद्याः अधीतवान् । अध्ययनात् परं संसारसुखं त्यक्त्वा स वानप्रस्थम् अकरोत् । एकदा बोधिसत्त्वः वने भ्रमन् पर्वतगुहायां स्थितामेकां व्याघ्रीम् अपश्यत् । सा तत्क्षणमेव शावकान् प्रसूतवती । अतः व्याघ्री खाद्यसंग्रहार्थमसमर्था सती क्षुधया व्याकुला अभवत् । दयालुः बोधिसत्त्वः तस्याः व्याकुलतां ज्ञात्वा चिन्तितवान् - “हन्त ! जीवस्य दुःखम् । अत्र खाद्यं कः दास्यति ? खाद्यं विना व्याघ्री करिष्यति एव, मम इदमनित्यं शरीरं वृथा भविष्यति । अतः मम शरीरेण व्याघ्राः जीवनं रक्षिष्यामि ।” इति निश्चित्य स महात्मा व्याघ्रीसमीपं गतः । व्याघ्री अपि तं भुक्त्वा तृप्ता जाता एवं भगवान् बुद्धः शतवारं परार्थे प्राणान् त्यक्तवान् । साधूक्तम् - धनानि जीवितं चैव परार्थे प्रास उत्सृजेत् ।

सन्निमित्ते वरं त्यागो विनाशे नियते सति ॥

(i) बोधिसत्त्वः कदा वानप्रस्थम् अकरोत् ?

---

---

(ii) वने भ्रमन् बोधिसत्त्वः किम् अपश्यत् ?

---

---

(iii) व्याघ्री कुत्र आसीत् ?

---

---

(iv) महात्मा बोधिसत्त्वः कुत्र गतः ?

---

---

(v) बुद्धः कतिवारं प्राणान् त्यक्तवान् ?

---

---



**ADDITIONAL PAGES**

